वर्ष 10, अंक 113

सहयोग शुल्क : रु.1 / जून 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेषभाई

दिव्यांग यात्रा सहायता योजना

दिव्यांगजनों के सुरक्षित और सम्मानजनक यात्रा के लिए सहयोग

"दिव्यांगता कोई सीमा नहीं,
बल्कि संघर्ष से सफलता तक की प्रेरणादायक यात्रा है।"
(प.पू.संतश्री सदगुरु ॐऋषि स्वामी)

"जिसके हौसले मजबूत हों, उसके लिए
दिव्यांगता भी एक नई ताकत बन जाती है।"
(प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी)

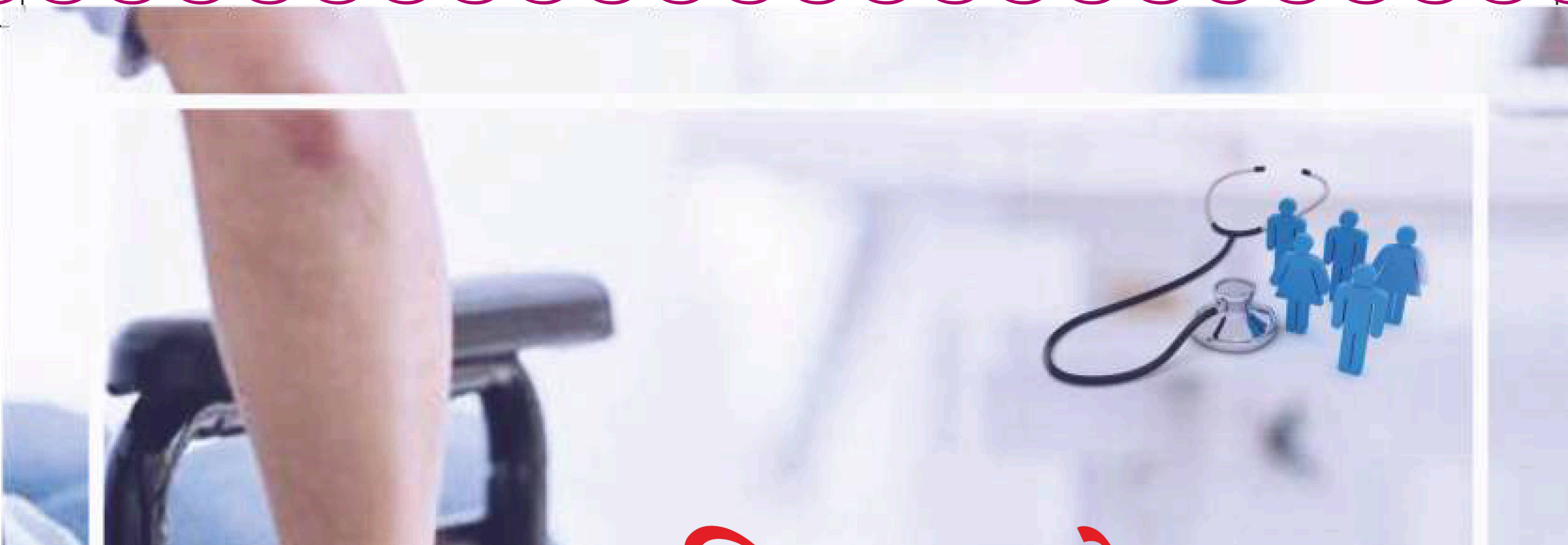

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रलपाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदनपत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

जीवन हमें बार-बार यह सिखाता है कि मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके शरीर की सीमाओं में नहीं, बल्कि उसकी चेतना, साहस और संकल्प में छिपी होती है। जब समाज किसी व्यक्ति को “दिव्यांग” कहता है, तब हमें यह समझना चाहिए कि यह केवल एक स्थिति का वर्णन नहीं, बल्कि भीतर छिपी अद्भुत क्षमताओं को पहचानने का अवसर भी है। आज समाज में ऐसे अनेक प्रयास हो रहे हैं जो इन क्षमताओं को जागृत करने का माध्यम बन रहे हैं।

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए आयोजित समर कैंप और क्राफ्ट वर्कशॉप केवल गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि आत्मविश्वास और आनंद के नए द्वार हैं। अपेक्षा फाउंडेशन जैसी संस्थाओं की पहल हमें यह दिखाती है कि संवेदनशीलता और सहयोग के माध्यम से जीवन में नई रोशनी लाई जा सकती है। इसी प्रकार गुजरात सरकार की फ्री बस पास योजना केवल यात्रा सुविधा नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और सम्मान की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है।

जब हम अरुणिमा सिन्हा जैसी प्रेरणादायक हस्तियों के संघर्ष और सफलता की यात्रा देखते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि परिस्थितियाँ कभी भी किसी मनुष्य की उड़ान को सीमित नहीं कर सकतीं। दिव्यांग प्रीमियर लीग (DPL) जैसी पहलें भी यह संदेश देती हैं कि सपनों को देखने और उन्हें पूरा करने का अधिकार सभी को समान रूप से है। साथ ही, यात्रा के दौरान दिव्यांगजनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किए जा रहे प्रबंध समाज की परिपक्वता और जागरूकता को दर्शाते हैं।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जून 2026, पृष्ठ संख्या – 16

वर्ष – 10 | अंक – 113

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट(NGO)

Trust Reg. No.: E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉट के सामने, नया
विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००७

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए समर कैंप का आयोजन

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास और उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से विशेष समर कैंप का आयोजन किया गया। यह समर कैंप विशेष रूप से मनोदिव्यांग लाभार्थियों के लिए आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों को मनोरंजन, रचनात्मकता और सामाजिक सहभागिता से जोड़ने वाली अनेक गतिविधियों का अनुभव कराया गया।

कैंप के दौरान बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की इंडोर गेम्स, डांस, गरबा तथा आर्ट एवं ड्रॉइंग जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों में बच्चों ने पूरे उत्साह और आनंद के साथ भाग लिया। रंगों से चित्र बनाना, संगीत की धुन पर नृत्य करना और समूह में गरबा प्रस्तुत करना बच्चों के लिए अत्यंत आनंददायक अनुभव रहा। इन गतिविधियों ने बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभाओं को बाहर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समूह गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, सहभागिता और सामाजिक जुड़ाव की भावना विकसित हुई। कैंप का वातावरण बच्चों की खुशी, उत्साह और रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर दिखाई दिया। इस प्रकार की गतिविधियाँ मनोदिव्यांग बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं।

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित यह समर कैंप केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर सामने आया।

वोइस टू दिव्यांग

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास और उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से विशेष समर कैंप का आयोजन किया गया। यह समर कैंप विशेष रूप से मनोदिव्यांग लाभार्थियों के लिए आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों को मनोरंजन, रचनात्मकता और सामाजिक सहभागिता से जोड़ने वाली अनेक गतिविधियों का अनुभव कराया गया।

कैंप के दौरान बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की इंडोर गेम्स, डांस, गरबा तथा आर्ट एवं ड्रॉइंग जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों में बच्चों ने पूरे उत्साह और आनंद के साथ भाग लिया। रंगों से चित्र बनाना, संगीत की धुन पर नृत्य करना और समूह में गरबा प्रस्तुत करना बच्चों के लिए अत्यंत आनंददायक अनुभव रहा। इन गतिविधियों ने बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभाओं को बाहर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समूह गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, सहभागिता और सामाजिक जुड़ाव की भावना विकसित हुई। कैंप का वातावरण बच्चों की खुशी, उत्साह और रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर दिखाई दिया। इस प्रकार की गतिविधियाँ मनोदिव्यांग बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं।

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित यह समर कैंप केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर सामने आया।

अपेक्षा फाउंडेशन बन रहा हजारों जरूरतमंदों की नई उम्मीद

समाज में दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर और सम्मानपूर्ण जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से कार्यरत संस्थाओं में अपेक्षा फाउंडेशन आज एक प्रेरणादायी नाम बन चुका है। पिछले दो वर्षों से संस्था दिव्यांगजनों के जीवन में नई आशा, आत्मविश्वास और स्वावलंबन का संचार करने का निरंतर प्रयास कर रही है। संस्था के संस्थापक ट्रस्टी अल्पेश कारेणा तथा उनकी समर्पित टीम पिछले 12 वर्षों से दिव्यांग सेवा से जुड़े हुए हैं।

केवल सात सदस्यों से शुरू हुई यह संस्था आज 150 से अधिक स्वयंसेवकों और सहयोगियों के विशाल परिवार में परिवर्तित हो चुकी है। संस्था ने हजारों जरूरतमंद और निराश्रित दिव्यांगजनों तक सहायता पहुंचाकर उनके जीवन में नई रोशनी लाने का कार्य किया है। अपेक्षा फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगजनों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना, उन्हें मानसिक निराशा से बाहर निकालना, उनकी प्रतिभा को समाज के सामने लाना तथा उन्हें रोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है।

संस्था द्वारा वर्तमान समय में गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में जरूरतमंद दिव्यांगजनों को आजीवन राशन किट, ट्राइसिकल, व्हीलचेयर, पाटला तथा घोड़ी जैसी आवश्यक सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अतिरिक्त विभिन्न त्योहारों पर 100 से अधिक दिव्यांग परिवारों को भोजन, मिठाई, चिकी, लड्डू और सूखे नाश्ते का वितरण भी किया जाता है।

संस्था का प्रयास केवल सहायता देना नहीं, बल्कि दिव्यांग परिवारों के जीवन में अपनापन, सम्मान और आत्मविश्वास की भावना स्थापित करना भी है। जरूरतमंद दिव्यांगजन आधार कार्ड, दिव्यांग प्रमाणपत्र और अपना फोटो प्रस्तुत कर संस्था की सेवाओं का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

वोइस टू दिव्यांग

अपेक्षा फाउंडेशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल शुरू की है। गुजरात के 15 से अधिक गांवों और शहरों में संस्था द्वारा स्वरोजगार के लिए विशेष कियोस्क एवं रोजगार केबिन वितरित किए गए हैं। केवल केबिन ही नहीं, बल्कि उसमें आवश्यक व्यापारिक सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है, ताकि दिव्यांगजन स्वयं का रोजगार शुरू कर सकें।

संस्था के इस प्रयास ने अनेक ऐसे दिव्यांगजनों के जीवन को नई दिशा दी है, जो कभी निराशा और आत्महत्या जैसे विचारों से घिरे हुए थे। आज वही लोग अपने परिवार का पालन-पोषण सम्मानपूर्वक कर रहे हैं। संस्था भविष्य में भी इस रोजगार अभियान को और व्यापक स्तर पर जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

दिव्यांगजनों के जीवन में मानसिक तनाव और अकेलेपन की समस्या को ध्यान में रखते हुए संस्था ने गुजरात में पहली बार दिव्यांगजनों के लिए सासण गीर का विशेष भ्रमण आयोजित किया। तीन दिवसीय इस यात्रा में प्रतिभागियों को गीर सफारी, सोमनाथ मंदिर दर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेने का अवसर मिला, जिसने उनके जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया।

संस्था समय-समय पर प्रतिभाशाली दिव्यांगजनों को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मान समारोहों का आयोजन भी करती है। ऐसे दिव्यांगजन जिन्होंने अपनी प्रतिभा और मेहनत से देश-विदेश में पहचान बनाई है, उन्हें विशिष्ट अतिथियों एवं सेलिब्रिटीज के हाथों सम्मानित किया जाता है।

अपेक्षा फाउंडेशन का उद्देश्य ऐसा समाज बनाना है, जहां कोई भी दिव्यांगजन बेरोजगार, निराश या असहाय महसूस न करे। भविष्य में संस्था “दिव्य नगरी” और “दिव्यांग बिजनेस हब सेंटर” की स्थापना का सपना साकार करना चाहती है, जहां हजारों दिव्यांग परिवार आत्मनिर्भर होकर सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें।

वोइस टू दिव्यांग

गुजरात सरकार की सराहनीय पहल

दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर और सुविधाजनक जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से गुजरात सरकार द्वारा “लाइफटाइम फ्री बस पास योजना” चलाई जा रही है। यह योजना GSRTC द्वारा संचालित है, जिसके अंतर्गत पात्र दिव्यांगजन राज्य की एसटी बसों में निशुल्क यात्रा कर सकते हैं।

इस योजना का लाभ उन व्यक्तियों को मिलता है जिनमें कम से कम 40 प्रतिशत दिव्यांगता हो। इसमें शारीरिक दिव्यांगता, दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित, ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी और अन्य न्यूरोलॉजिकल स्थितियों वाले व्यक्ति भी शामिल हैं।

फ्री बस पास के माध्यम से दिव्यांगजन शिक्षा, नौकरी, इलाज और अन्य आवश्यक कार्यों के लिए बिना आर्थिक बोझ के यात्रा कर सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है। इच्छुक व्यक्ति ऑनलाइन “ई समाज कल्याण” पोर्टल या जिला समाज सुरक्षा कार्यालय में आवेदन कर सकते हैं।
यह योजना केवल यात्रा सुविधा नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों के आत्मविश्वास, सम्मान और सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करने की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है।

वोइस टू दिव्यांग

संघर्ष से शिखर तक

भारत में अनेक ऐसे दिव्यांग व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपनी कमजोरी को ही अपनी सबसे बड़ी ताकत बना दिया। ऐसी ही प्रेरणादायक महिला हैं अरुणिमा सिन्हा, जिनका जीवन आज करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा बन चुका है। वे दुनिया की पहली महिला दिव्यांग पर्वतारोही हैं जिन्होंने माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर इतिहास रच दिया।

अरुणिमा सिन्हा का जन्म उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर जिले में हुआ था। बचपन से ही उन्हें खेलों में विशेष रुचि थी और वे राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं। उनका सपना था कि वे खेलों में देश का नाम रोशन करें। परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य होने के बावजूद उन्होंने अपने सपनों को कभी टूटने नहीं दिया।

साल 2011 में उनके जीवन में एक भयानक हादसा हुआ। नौकरी के इंटरव्यू के लिए दिल्ली जाते समय कुछ अपराधियों ने ट्रेन में उनसे चेन छीनने की कोशिश की। विरोध करने पर उन्हें चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। उसी समय दूसरी ट्रेन उनके पैर के ऊपर से गुजर गई, जिससे उनका एक पैर कट गया।

यह हादसा किसी भी व्यक्ति को पूरी तरह तोड़ सकता था, लेकिन अरुणिमा ने हार मानने के बजाय अपने जीवन को नई दिशा देने का फैसला किया। अस्पताल में इलाज के दौरान ही उन्होंने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का सपना देखा।

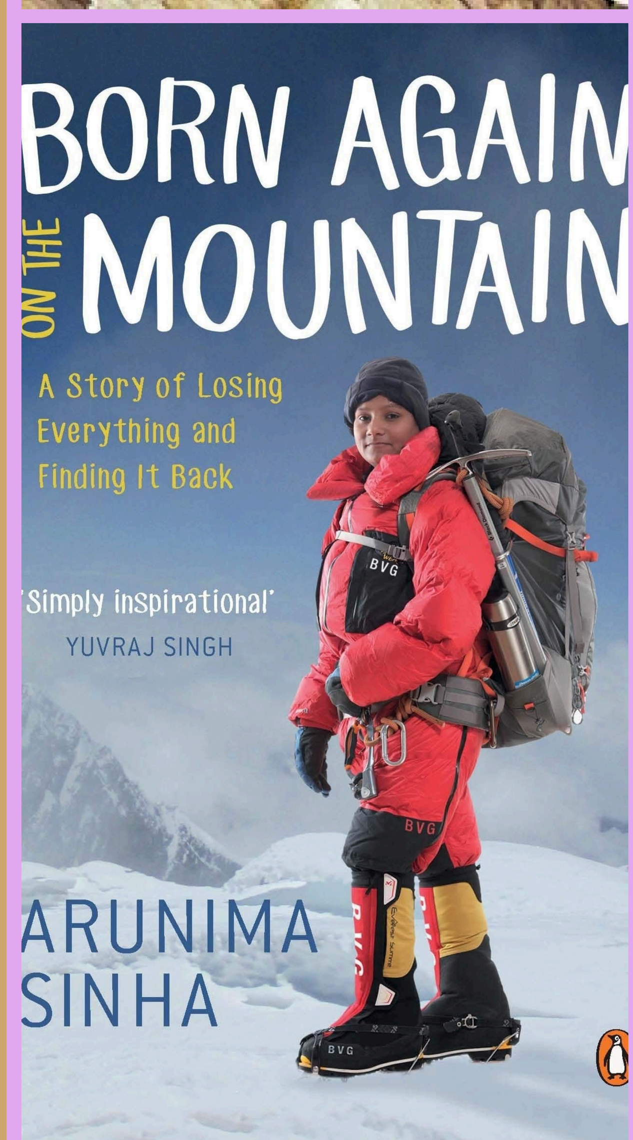

वोइस टू दिव्यांग

दिव्यांगजनों के लिए बनीं साहस और आत्मविश्वास की मिसाल

अरुणिमा सिन्हा ने अपने कठिन संघर्ष को ही अपनी सबसे बड़ी ताकत बना लिया। उन्होंने प्रसिद्ध पर्वतारोही बचेंद्री पाल से प्रशिक्षण लिया और कृत्रिम पैर के सहारे पर्वतारोहण की कठिन तैयारी शुरू की। शुरुआत में उन्हें कई परेशानियों और दर्द का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

साल 2013 में अरुणिमा सिन्हा ने माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचकर भारत का तिरंगा फहराया और दुनिया की पहली महिला दिव्यांग पर्वतारोही बनने का गौरव हासिल किया। यह केवल उनकी व्यक्तिगत जीत नहीं थी, बल्कि पूरे भारत और दिव्यांग समाज के लिए गर्व का क्षण था।

माउंट एवरेस्ट फतह करने के बाद उन्होंने कई अन्य ऊँची चोटियों पर भी विजय प्राप्त की। आज वे एक सफल मोटिवेशनल स्पीकर और समाजसेवी के रूप में लाखों लोगों को प्रेरित कर रही हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि असली ताकत शरीर में नहीं, बल्कि इंसान के इरादों और आत्मविश्वास में होती है।

अरुणिमा सिन्हा को उनके साहस और उपलब्धियों के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। वे आज हर दिव्यांग व्यक्ति के लिए उम्मीद, संघर्ष और सफलता की जीवित मिसाल बन चुकी हैं।उनकी कहानी यह संदेश देती है कि यदि हौसले बुलंद हों, तो कोई भी मंजिल दूर नहीं होती।

दिव्यांग प्रीमियर लीग : सपनों को नई उड़ान

भारत में क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की भावना है। अब यही खेल दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए भी प्रेरणा, पहचान और आत्मविश्वास का माध्यम बन रहा है। दिव्यांग क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ऑफ इंडिया (DCCI) द्वारा आयोजित “दिव्यांग प्रीमियर लीग” (DPL) आज दिव्यांग खिलाड़ियों की प्रतिभा को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण आयोजन बन चुका है।

डीपीएल की शुरुआत आईपीएल की तर्ज पर की गई, ताकि दिव्यांग खिलाड़ी भी पेशेवर क्रिकेट का अनुभव प्राप्त कर सकें। इस लीग में देश के विभिन्न राज्यों से चयनित लगभग 90 दिव्यांग खिलाड़ियों को छह टीमों में विभाजित किया जाता है। खिलाड़ियों का चयन उनकी प्रतिभा, मेहनत और खेल भावना के आधार पर किया जाता है। यह आयोजन केवल एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, सम्मान और समान अवसर का प्रतीक बन चुका है।

इस लीग का आयोजन कई बार संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के प्रसिद्ध शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में भी किया गया है। अंतरराष्ट्रीय मैदान पर खेलने का अवसर दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए किसी सपने से कम नहीं होता। यह टूर्नामेंट पूरी तरह भारतीय संस्था दिव्यांग क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ऑफ इंडिया द्वारा संचालित किया जाता है, जो भारत में दिव्यांग क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्यरत है।

डीपीएल ने देशभर के दिव्यांग खिलाड़ियों को नई पहचान दिलाई है। खिलाड़ियों ने अपने शानदार प्रदर्शन से यह साबित किया कि शारीरिक चुनौतियाँ उनके हौसलों को कभी कमजोर नहीं कर सकतीं। मैदान पर उनका आत्मविश्वास और खेल भावना दर्शकों तथा क्रिकेट प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है।

वॉइस टू दिव्यांग

आत्मविश्वास, प्रतिभा और समान अवसर का प्रेरणादायक मंच

इस लीग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि खिलाड़ियों को केवल खेलने का अवसर ही नहीं मिलता, बल्कि टीम भावना, अनुशासन, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता का अनुभव भी प्राप्त होता है। कई खिलाड़ी छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जहाँ सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने मेहनत और लगन से अपनी पहचान बनाई है।

दिव्यांग प्रीमियर लीग समाज को यह महत्वपूर्ण संदेश देती है कि प्रतिभा किसी शारीरिक सीमा की मोहताज नहीं होती। यदि सही मंच और अवसर मिले, तो दिव्यांग खिलाड़ी भी देश और समाज का नाम रोशन कर सकते हैं। आज भारत में दिव्यांग खेलों के प्रति जागरूकता लगातार बढ़ रही है और डीपीएल जैसे आयोजन इस सकारात्मक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दिव्यांग प्रीमियर लीग आज हजारों दिव्यांग युवाओं के लिए उम्मीद और प्रेरणा की किरण बन चुकी है। यह लीग यह साबित करती है कि मजबूत इरादों, मेहनत और आत्मविश्वास के साथ हर चुनौती को सफलता में बदला जा सकता है।

वोइस टू दिव्यांग

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए समर कैंप

अखबार नगर स्थित स्मित चाइल्ड एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास और उनके आत्मविश्वास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विशेष समर कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप में बच्चों के लिए मनोरंजन के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता, सामाजिक सहभागिता और व्यक्तिगत कौशल को विकसित करने वाली अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

कैंप के दौरान बच्चों ने उत्साहपूर्वक डांस और गरबा जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया, जिससे उनमें आत्म-अभिव्यक्ति और मंच पर प्रस्तुति देने का आत्मविश्वास विकसित हुआ। आर्ट एवं ड्रॉइंग सत्र में बच्चों को अपनी कल्पनाओं और भावनाओं को रंगों के माध्यम से व्यक्त करने का अवसर मिला। इसके अतिरिक्त विभिन्न इंडोर गेम्स का आयोजन किया गया, जिनके माध्यम से बच्चों में एकाग्रता, टीमवर्क, समन्वय तथा निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा मिला।

समर कैंप के दौरान बच्चों के लिए मनोरंजक खेल, संगीत, समूह गतिविधियाँ तथा रचनात्मक कार्यशालाएँ भी आयोजित की गई, जिससे वे नई चीजें सीखने के साथ-साथ आनंददायक वातावरण में समय बिता सकें। कैंप में प्रशिक्षकों एवं स्वयंसेवकों ने बच्चों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान किया और उन्हें प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि ऐसे आयोजन मनोदिव्यांग बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही, बच्चों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और नए मित्र बनाने का अवसर भी प्राप्त होता है। कैंप के समापन पर सभी बच्चों को सहभागिता प्रमाणपत्र एवं प्रोत्साहन स्वरूप उपहार प्रदान किए गए। बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने इस आयोजन की सराहना करते हुए इसे अत्यंत उपयोगी और आनंददायक बताया।

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित समर कैंप के अंतर्गत आउटडोर गतिविधियों के भाग रूप में लगभग 25 मनोदिव्यांग विद्यार्थियों को वस्त्रापुर स्थित Snow World की मनोरंजक एवं शैक्षणिक यात्रा करवाई गई। यह विशेष भ्रमण श्रीमती मीनाबेन पियूषकुमार पंचाल के सहयोग से आयोजित किया गया भीषण गर्मी के बीच विद्यार्थियों को बर्फीले वातावरण का अनूठा अनुभव प्राप्त हुआ। स्नो वर्ल्ड में बच्चों ने कृत्रिम हिमवर्षा (Snow Fall), स्केटिंग तथा विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों का भरपूर आनंद लिया। बर्फ से ढके वातावरण में खेलते हुए बच्चों के चेहरों पर उत्साह और खुशी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। कई विद्यार्थियों ने पहली बार बर्फ का अनुभव किया, जिससे उनका आनंद और भी बढ़ गया।

इस भ्रमण का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि मनोदिव्यांग विद्यार्थियों को नए वातावरण से परिचित कराना, उनके सामाजिक कौशल को विकसित करना तथा उनमें आत्मविश्वास का संचार करना भी था। यात्रा के दौरान शिक्षकों और स्वयंसेवकों ने बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा उनकी सुरक्षा और सुविधा का विशेष ध्यान रखा।

विद्यार्थियों ने बर्फ में खेलकूद, समूह गतिविधियों तथा यादगार पलों का भरपूर आनंद लेते हुए इस यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि इस प्रकार की आउटडोर गतिविधियां बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों ने इस अनूठे अनुभव के लिए आयोजकों और सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

वोइस टू दिव्यांग

दिव्यांगजनों के लिए सुगम यात्रा की ओर बढ़ते कदम

आज के समय में समाज तेजी से सुगम्यता (Accessibility) की ओर बढ़ रहा है। दिव्यांगजनों को भी अन्य लोगों की तरह स्वतंत्र, सुरक्षित और सम्मानपूर्वक यात्रा करने का अधिकार है। इसी उद्देश्य से सरकार तथा विभिन्न परिवहन सेवाओं द्वारा अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे उनकी यात्रा अधिक आसान और सुविधाजनक बन सके।

रेलवे यात्रा में दिव्यांग यात्रियों के लिए व्हीलचेयर, रैंप, लिफ्ट, एस्केलेटर तथा आरक्षित सीटों जैसी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। कई बड़े रेलवे स्टेशनों पर सहायता केंद्र भी स्थापित किए गए हैं, जहाँ कर्मचारी आवश्यक सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अलावा ऑनलाइन टिकट बुकिंग, विशेष कोटा और डिजिटल सहायता सेवाओं के माध्यम से यात्रा को और अधिक सरल बनाया गया है।

बस सेवाओं में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। कई शहरों में लो-फ्लोर बसें चलाई जा रही हैं, जिनमें व्हीलचेयर का उपयोग करने वाले यात्री आसानी से यात्रा कर सकते हैं। बस स्टैंडों पर रैंप और विशेष बैठने की व्यवस्था की जा रही है। कुछ राज्यों में दिव्यांगजनों को किराए में छूट तथा निःशुल्क यात्रा की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

हवाई यात्रा के क्षेत्र में भी दिव्यांग यात्रियों के लिए विशेष सुविधाएँ उपलब्ध हैं। एयरपोर्ट पर व्हीलचेयर सहायता, विशेष कर्मचारी, लिफ्ट और आसान प्रवेश व्यवस्था दी जाती है। एयरलाइन कंपनियाँ दिव्यांग यात्रियों को प्राथमिक बोर्डिंग की सुविधा प्रदान करती हैं, जिससे वे आरामपूर्वक अपनी सीट तक पहुँच सकें। दृष्टिबाधित यात्रियों के लिए ऑडियो सहायता और दिशा-निर्देश संबंधी सुविधाएँ भी कई स्थानों पर उपलब्ध हैं।

मेट्रो रेल सेवाओं में लिफ्ट, ब्रेल संकेत, ऑडियो अनाउंसमेंट और विशेष सीटों की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर विशेष शौचालय और सुगम प्रवेश द्वार बनाए जा रहे हैं, जिससे दिव्यांगजनों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।हालाँकि अभी भी छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं का पर्याप्त विस्तार होना बाकी है।

इसलिए केवल आधारभूत सुविधाएँ विकसित करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में जागरूकता, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देना आवश्यक है।दिव्यांगजनों के लिए सुगम यात्रा व्यवस्था उन्हें आत्मनिर्भर बनाने, आत्मविश्वास बढ़ाने और समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। एक सशक्त और समावेशी समाज वही है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर, सम्मान और स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने का अधिकार प्राप्त हो।

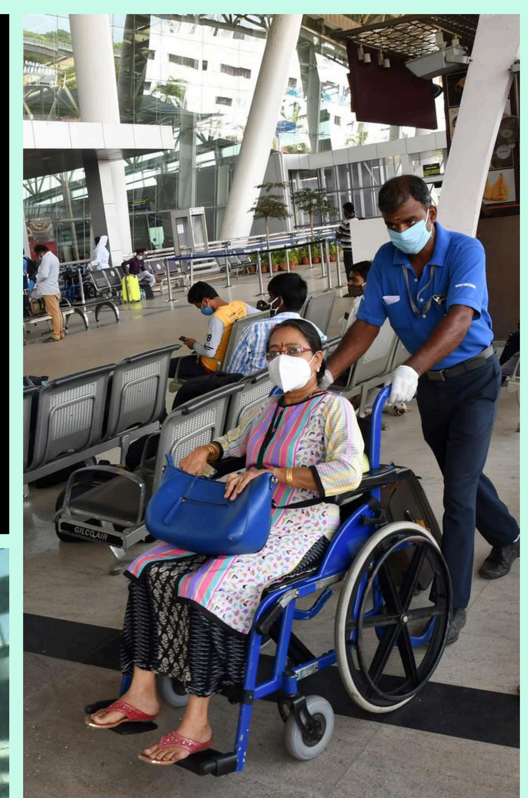
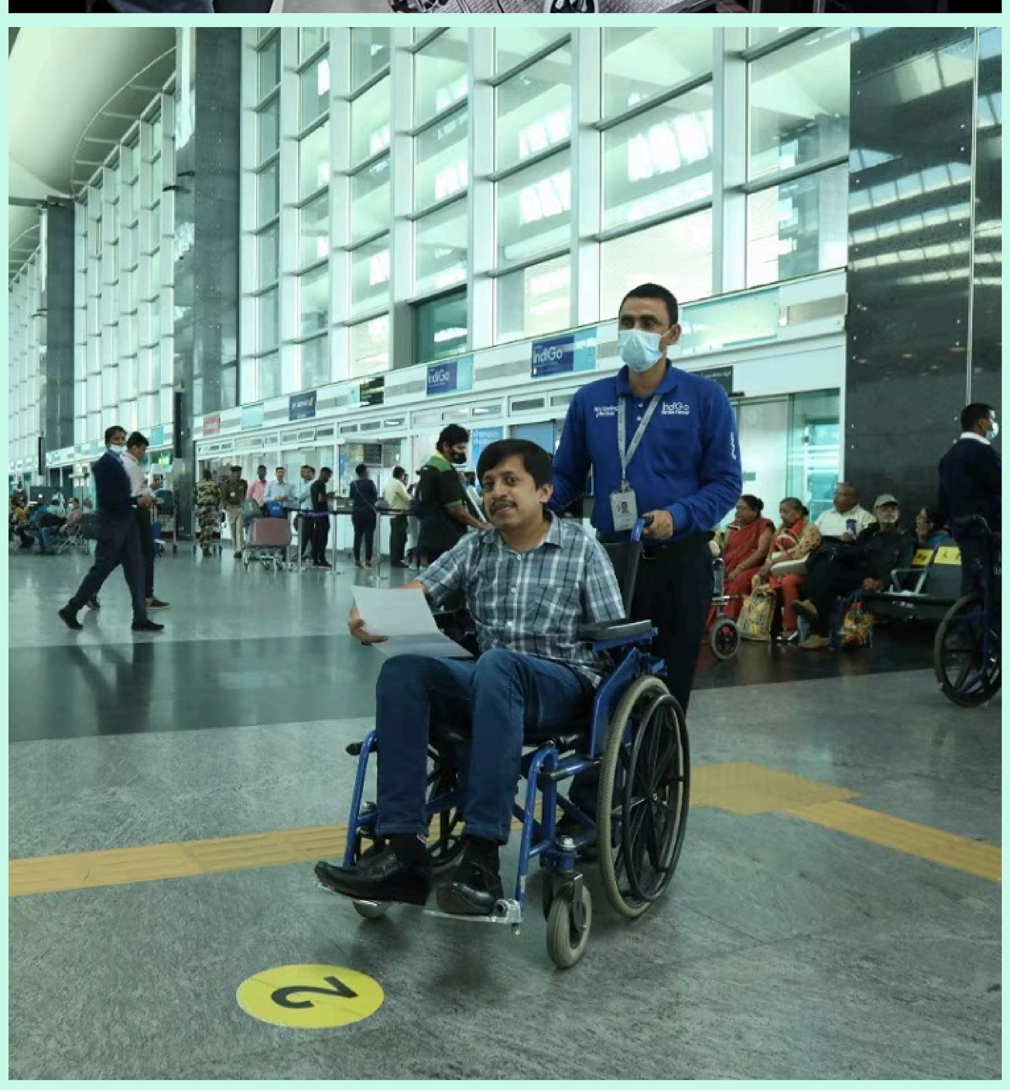

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

▲ DIVYANG KITE FESTIVAL ▲ SPORTS DAY CELIBRATION ▲ REPUBLIC DAY CELIBRATION ▲ HOLI CELIBRATION
▲ KIDS FASHION SHOW ▲ DRAWING COMPITITION ▲ WORLD ENVIRONMENT DAY ▲ DISABILITY AWARNESS CAMP
▲ ART & CRAFT WORK SHOP ▲ FUN & GAMES (MINUTE TO WIN IT) ▲ NAVRATRI CELIBRATION

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 7575876618